पाकिस्तान की राजनीति और जुल्फिकार अली भुट्टो

डा. विनय बहादुर पाण्डेय
पा"चात्य इतिहास विभाग
लखनऊ वि"वविद्यालय लखनऊ

जुल्फिकार अली भुट्टो 1953 में पारिवारिक समस्याओं के कारण पाकिस्तान वापस लौटकर आये। कुछ समय प"चात करॉची में उन्होने वकालत शुरू करने के लिए एक दफ्तर खोल दिये। भुट्टो फौजदारी ओर दीवानी दोनों ही तरह के मुकदमों की पैरवी करने वाले विख्यात वकील श्री रामचन्द्रानी के साथ प्रैक्टिस करने लगे। लेकिन रामचन्दानी कुछ समय प"चात ही भुट्टो को अपना प्रतिद्वन्दी समझने लगें और वे भुट्टो को राजनीति में जाने के लिए प्रेरित करने लगे। भुट्टो के मन में राजनीति के प्रति लगाव पहले से तो था ही परन्तु वे यह सोचते थे कि वकालत और राजनीति दोनों एक साथ नही चल सकती है। भुट्टो के पिता शाहनवाज भुट्टो ने भी जुल्फिकार को समझाये थें कि राजनीति में समय से पहले घुसना अपने आपको खतरों में डालना है ओर वहॉ से फिर बाहर निकल पाना सम्भव नहीं होता है, भुट्टो के वकालत शुरू करने वकालत के कुछ समय प"चात उनकी ही गणना वहां के प्रतिष्ठित बड़े वकीलो में होने लगी। भुट्टो अपने पास आये सभी मुकदमें प्रायः हत्या सम्बन्धी मुकदमें उन्होनें बिना किसी अपवाद के ही उन मुकदमों पर जीत हासिल की लेकिन भुट्टो का मन वकालत में नही लगता था वे राजनीति में आना चाहते थे। ताकि वह पाकिस्तान के लिए कुछ अच्छा कर सकें। इसलिए भुट्टो ने पाकिस्तान की राजनीति में हिस्सा लेना आरम्भ कर दियां उस समय पाकिस्तानी सरकार ने प"चमी पाकिस्तान के विभिन्न प्रान्तों को समाप्त करने का एक निर्णय लिया था जिसके कारण प"चमी पाकिस्तान की जनता ने सरकार के विरूद्व प्रबल विरोध करने का निर्णय लिया था और भुट्टो के लिए यह एक अच्छा मौका था और वे इस विरोध पर चुपचाप नही बैठने वाले थे। उन्होनें भी इसका खुलकर विरोध किया। इसी दौरान भुट्टो को सिंघ यूथ फ्रन्ट का अध्यक्ष चुन लिया गया। प"चमी पाकिस्तान के सभी प्रान्तों को समाप्त कर एक प्रान्त बनाये जाने की भुट्टो ने तीब्र आलोचना की और उन्होनें उस समय एक पम्फलेट भी लिखा–जिसका शीर्षक था ''पाकिस्तान संघ राज्य है।'' समय सिन्ध की सरकार का नेतृत्व श्री खोरी कर रहे थे। श्री खोरी ने भुट्टो को कई बार गिरफ्तार करने के बारे में गम्भीरता से सोचा। परन्तु उस समय भुट्टो परिवार का इतना प्रभाव था कि उनका सोचना असफल रहा। क्योंकि भुट्टो के पिता शाहनवाज भुट्टो को सिंघ का निर्माता माना जाता था। ऐसी स्थिति में श्री खोरी ने भुट्टो के विरूद्व कुछ भी नही कर पाये। लेकिन भुट्टो के पिता शाहनवाज भुट्टो ने एक बार पुनः भुट्टो को समझायें कि राजनीति में समझदारी से काम करना चाहिए इसलिए भुट्टो कुछ दिनों के लिए चुप बैठ गये। भुट्टो का परिवार भी एक राजनीतिज्ञ था इसलिए पारिवारिक सम्बन्धो के कारण भुट्टो समय से पहले ही सरलता से राजनीति में प्रवे"ा पा लिए। क्योंकि पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस्कंदर मिर्जा भुट्टो के परिवार पिता शाहनवाज भुट्टो के घनिष्ठ मित्रों में से थे। उस समय सर्दियों में जब भी कभी राष्ट्रपति इस्कंदर मिर्जा और जरनल अयूब खान लरकाना आते थें, तो भुट्टो के पिता सर शाहनवाज भुट्टो उन्हें अपने यहॉ भोजन के लिए निमंत्रित करते थे। और उनके इस निमन्त्रण का वे लोग बड़ा सम्मान करते थे तथा भुट्टो के घर आते थे। इन अवसरो पर जुल्फिकार अली भुट्टो भी घर उपस्थित रहते थे। 1955 में पहली बार जुल्फिकार अली भुट्टो की बातचीत पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस्कंदर मिर्जा से हुई। इस्कंदर मिर्जा भुट्टो की बातों से बहुत प्रभावित हुए। 1957 ई. में जुल्फिकार अली भुट्टो को करॉची का मेयर बनाये जाने पर भी विचार हो रहा था लेकिन भुट्टो ने इसे अस्वीकार कर दिया। जुल्फिकार अली भुट्टो ने कह दिया कि वे एसे पदों पर काम करना नही चाहते जिसका चुनाव होता हो, यह उनके अन्दर अलोक तान्त्रिक रूख का एक प्रमाण कह सकते है। भुट्टो चुप नही बैठने वाले थे वे सिन्ध के अन्दरूनी इलाको में राजनीति काम करते रहे।

ंसिम्बर 1957 ई0 में भुट्टो को अमेरिका जाने वाले प्रतिनिधि मण्डल का सदस्य चुन लिया गया। इस चुनाव से भुट्टो का राजनीतिक कैरियर में प्रवे"ा हो गया। भुट्टो को काफी प्रसन्नता हुई संयुक्त राष्ट्र संघ की छठी कमेठी में आक्रमण की परिभाषा का जुल्फिकार अली भुट्टो ने भाषण दिया। जो आज भी कुछ क्षेत्रों में महत्वपूर्ण माना जाता है। भुट्टो अपने राजनीतिक जीवन में प्रवे"ा करते ही विदे"ाो में अपना प्रभाव जमाने की कोि"ा"ा शुरू कर

दी। उस समय भुट्टो की आयु मात्र 29 वर्ष थी। 1958 ई0 में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री सुहरावर्दी को प्रधानमंत्री पद से हटा कर नये प्रधानमंत्री फिरोजखान नून को बनाया गया। सन् 1958 ई0 में प्रधानमंत्री फिरोजखान नून जुल्फिकार अली भुट्टो को जेनेवा में समुद्री कानून के बारे में अमेरिकी सम्मेलन में जाने वाले प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व करने का कार्यभार सौप दिया। भुट्टो ने इसे सहर्ष स्वीकार किया। अब भुट्टो की प्र''ंसा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होने लगी। इस सम्मेलन में इनकी प्रस्तुति काफी सराहनीय और प्रं''ासनीय रही। जुल्फिकार अली भुट्टो ने अपनी राजनैतिक स्थिति विदे''ाो दे''ाों मे प्रतिष्ठा प्राप्त करके बनाई थी। पाकिस्तान के बहुत बड़े जनमत को लेकर वह पाकिस्तान की राजनीति में नही आये थे।

उस समय पाकिस्तान की राजनीति में काफी उथल पथल चल रहा था। 7 अक्टूबर 1953 ई0 में रात्रि लगभग साढे बजे इस्कंदर मिर्जा ने संविधान को रद्द करते हुए केन्द्रीय व प्रान्तीय सरकारो को बरखास्त करते हुए तथा संसदीय व प्रान्तीय विधान सभाओं को भंग करते हुए, सभी राजनीतिक दलों को खत्म करते हुए और अयूब खान के नेतृत्व में पूरे पाकिस्तान में मा''ाल लॉ स्थापित करने की घोषणा जारी की। इस्कंदर मिर्जा ने 27 अक्टूबर 1958 ई0 को नई सरकार की घोषणा की। इस सरकार में अयूब खॉ को प्रधानमंत्री बनाया गया। इसी दिन को शाम को अयूब और अन्य जनरल मिर्जा से मिले और अत्यन्त सम्मान के साथ उनसे पे''ा आय। 27–28 अक्टूबर की रात पाकिस्तान के लिए बड़ी नाटकीय थी। रात को लगभग दस बजे एक नौकर ने राष्ट्रपति के शयन कक्ष के दरवाजे पर दस्तक दी और कहा कि कुछ जनरल उनका इंतजार कर रहे है। उन जनरलो ने मिर्जा को राष्ट्रपति पद से हटने के लिए अयूब खॉ के संदे''ा को दिया। इस प्रकार से पाकिस्तान के इतिहास में यह पहली बार हुआ कि अयूब खॉ ने दिन में प्रधानमंत्री की शपथ ली और रात में वह पाकिस्तान के राष्ट्रपति बन गये।

इसी दौरान जुल्फिकार अली भुट्टो को भी अयूब खॉ ने अपनी नई सरकार में शामिल होनें के लिये आमंत्रित किया। बाकी परिस्थितियों को देखते हुए जुल्फिकार अली भुट्टो भी पहले तख्ता पलट को काफी शक की निगाहों से देखते थे। लेकिन मिलिटरी सरकार ने उन्हें भरोसा दिलाया कि पाकिस्तान में मा''ाल लॉ को जल्द ही खत्म कर दिया जाएगा और मिलिटरी सरकार हालात को पहले की तरह लाने की पूरी कोि''ा''ा करेगी। शायद वो प्रजातन्त्र के सच्चे दौर को लाने के लिए एक नया रास्ता बनाए। अतः मित्रता और असैनिक प्रतिभा के विचार को रखने वाले जुल्फिकार अली भुट्टो को अयूब के मंत्रीमण्डल में वाणिज्य मंत्री के रूप में चुना गया। जब कि इससे पहले भुट्टो ने अन्तराष्ट्रीय कानून, समुद्री कानून सम्बन्धी कानूनो को लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ में पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल को प्रतिनिधित्व कर चुके जुल्फिकार अली भुट्टो ने पाकिस्तान के वाणिज्य मंत्री पर रहते हुए पाकिस्तान के निर्यात व्यवस्था पर नियन्त्रण स्थापित किया और भुट्टो ने निर्यात केन्द्रो का निर्माण किया। वाणिज्यमंत्री भुट्टो ने इस बात पर जोर दिया कि जून 1959 के अन्त तक विदे''ाी व्यापार संगठनो के सुधारो को पूरा कर दिया जायेगा। भुट्टो ने वाणिज्य मंत्री पद पर रहते बहुत ही उल्लेखनीय कार्यो को किया जिसमें सबसे उल्लेखनीय कार्य पाकिस्तान में बोनस बाउचर स्कीम को लागू करना था। भुट्टो ने यह स्कीम पाकिस्तान के निर्यात व्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए लागू किये थे।

भुट्टो द्वारा इस स्कीम को लागू करने का उद्दे''य था कि पाकिस्तान के निर्यात व्यवस्था में मदद मिल सके। यह स्कीम जर्मनी के एक अर्थ''ाास्त्री के द्वारा बनाई गयी थी। इस स्कीम को लागू करने के उपरान्त पाकिस्तान के व्यापार सन्तुलन पर तुरन्त असर पड़ा। जिससे पाकिस्तान के निर्यात व्यवस्था में बढ़ोत्तरी हुई। इस स्कीम को भुट्टो ने पाकिस्तान की तत्कालीन अर्थ व्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए लागू किया था लेकिन पाकिस्तान ने इस अपनी बैसाखी बना ली जिसके कारण आगे चलकर इस व्यवस्था में कमियॉ आने लगी इस लिए जब भुट्टो राष्ट्रपति बने तो उन्होनें इस स्कीम को समाप्त कर दिया। भुट्टो जानते थे कि अगर राजनीति में आगे बढ़ना है तो इन्हें पाकिस्तान की जनता के बारे में अव''य सोचना पड़ेगा और जनता के लिए काम भी करना पड़ेगा। भुट्टो के इस प्रकार के कार्यो को देखकर पाकिस्तान की सरकार ने इनकी सराहना की। भुट्टो की कार्य करने की क्षमता से पाकिस्तानी जनता भी काफी खु''ा थी।

राष्ट्रपति अयूब खॉ की सरकार पाकिस्तान की जनता में काफी लोकप्रिय हो गयी थी। अयूब खॉन राष्ट्रपति बनने के प''चात उन्होनें शुरूआती महीनों में पाकिस्तान में कई सुधार किये। उन्होनें भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए उचित कदम उठाये और भ्रष्टाचार विरोधी एक कानून भी बनाया। जिससे जनता में उनकी बहुत प्रं''ासा होने लगी। जुल्फिकार अली भुट्टो भी अयूब खॉन की काफी प्र''ंसा करने लगे थे। भुट्टो एक ऐसे समय के इन्तजार मे थे कि वह कब राष्ट्रपति अयूब खॉन के प्रति अपनी वफादारी को साबित करें। इसी दौरान भुट्टो जकोवाबाद की

यात्रा पर गये। इस यात्रा के दौरान भुट्टो ने जकोवाबाद में एक भाषण–दिया। अपने इस भाषण में भुट्टो ने राष्ट्रपति अयूब खॉन की खूब प्र'ंसा की और कहा कि वह एक निडर नेता है।

जुल्फिकार अली भुट्टो अपने कैबिनेट मंत्री पद पर रहते हुए पहली बार अक्टूबर 1959 इ. में संयुक्त राष्ट्रसंघ में हो रहे प्रतिनिधि मण्डल सम्मेलन में पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया। राष्ट्रपति अयूब खॉन ने ही इस प्रतिनिधि मण्डल के नेतृत्व के लिए भुट्टो को चुना था। जुल्फिकार अली भुट्टो को 31 वर्ष की अवस्था में ही ऐसा शुभ अवसर प्राप्त हो गया। भुट्टो के लिए यह बहुत ही फर्क की बात थी। भुट्टो ने अपने इस कार्य को अत्यधिक सफलता पूर्वक निभाया। राष्ट्रपति अयूब खॉन के शासन के दौरान भुट्टो का यह पहला अवसर था कि उन्होनें अन्तराष्ट्रीय मंच पर पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व किया और उन्होनें अपने इस दायित्व को सहर्ष निभाया। इस सम्मेलन में भुट्टो ने पाकिस्तान का नेतृत्व करते हुए नि''स्त्रीकरण का धारा प्रवाह व्याख्या की और उन्होने सोबियत संघ व ब्रिटि''ा के नि''स्त्रीकरण प्रस्ताव का भी संक्षिप्त वर्णन किया। भुट्टो अन्तराष्ट्रीय कानून के विद्यार्थी रह चुके थे, इसलिए वे इस प्रकार धारा प्रवाह बोलने में सक्षम थे। भुट्टो ने इस सम्मेलन के पहले भी पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में अन्तराष्ट्रीय मंच पर बोल चुके थे। जनवरी 1960 ई. में पाकिस्तानी सरकार ने जुल्फिकार अली भुट्टो को सूचना एवं राष्ट्रीय पुर्न निर्माण से सम्बन्धित विभागो के मंत्रालयों का कार्य भार सौप दिया। राष्ट्रपति अयूब खॉन द्वारा यह मंत्रालय भुट्टो को सौपने का कारण यह था कि वे अपने दायित्व का निर्वाह बड़े ही सहज ढ़ग से कर रहे थे। जिसके कारण पाकिस्तान में अयूब खॉन के सरकार की काफी प्रं''सा हो रही थी। भुट्टो भी अयूब खॉन की काफी प्र''ंसा करते थे। अयूब खान भुट्टो से काफी प्रभावित थे। अयूब खॉन द्वारा भुट्टो को सूचना मंत्रालय देने का उद्दे''य यह था कि उनके शासन के दौरान होने वाली घटनाओं को उन्हें बताना था और उस पर विचार–विम''ा करके उस पर एक सही निर्णय लेना था।

अक्टूबर 1960 ई. में संयुक्त राष्ट्र संघ के 15वें अधिवे''ान में जुल्फिकार अली भुट्टो की अध्यक्षता में पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यों ने भाग लिया। यह अधिवे''ान भुट्टो के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था क्योंकि इस अधिवे''ान में कई अर्न्तराष्ट्रीय महान हिस्तयॉ खु''चेव मैकमिलन और फिडलकैस्ट्रो भी शामिल हुए थे। इस अधिवे''ान में भुट्टो इन महान हस्तियों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर खड़े हुए थे। इस प्रकार से भुट्टो की चर्चा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भी होने लगी थी। भुट्टो ने जब ऊर्जा एवं प्राकृतिक संसाधन मंत्रालय के पद को संभाले थे। तब उस समय सोबियत संघ ने पाकिस्तान के समक्ष तेल अनुसंधान में पाकिस्तान की मद्द करने का प्रस्ताव रखा था। सोवियत संघ के इस प्रस्ताव पर उस पाकिस्तान सरकार ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही की थी इसलिए भुट्टो को इस बात का श्रेय जाता है कि उन्होने पाकिस्तान के विदे''ाी सम्बन्धो में ऐतिहासिक परिवर्तन किये। भुट्टो पाकिस्तान का पि''चमी दे''ाों पर निर्भरता से सन्तुष्ट नही थे। वे पाकिस्तान की निर्भरता को सन्तुलित करने के लिए व्याकुल थे। इसी कारण भुट्टो कम्यूनिष्ठ और साम्यवादी गुट से सम्बन्ध स्थापित करने की नीति पर बल दे रहे थे। भुट्टो ने जब प्राकृतिक अनुसंधान मंत्रालय को सम्भाला तब उन्होनें राष्ट्रपति अयूब खॉन को सोबियत संघ के तेल सम्बन्धित प्रस्ताव पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया और भुट्टो ने सोवियत संघ के उस प्रस्ताव को भी स्वीकार किया। अक्टूबर 1960 में संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिवे''ान से वापस पाकिस्तान लौटने के बाद भुट्टो ने कहा कि मैं जल्द ही निकट भविष्य में क्रेडिट एग्रीमेन्ट और तेत अनुसंधान के विषयों पर सोबियत संघ से तकनीकी मद्द प्राप्त करने के सिलसिले से मास्को जाऊॅगा। अन्ततः पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल के साथ भुट्टो मास्को पहुॅच गये। सोवियत संघ ने भुट्टो के स्वागत सतकार के लिए क्रेमलिन में एक समारोह का आयोजन किया था। इस स्वागत समारोह में भुट्टो गये और वहॉ पर इनकी मुलाकात खु''चेव से हुई। खु''चेव ने भुट्टो का स्वागत किया। खु''चेव से भुट्टो की यह दूसरी मुलाकात थी पहली मुलाकात अभी कुछ ही महीनों पहले संयुक्त राष्ट्र संघ में हुई थी। संयुक्त राष्ट्र संघ के 15वें अधिवे''ान के जनरल असेम्बली में भुट्टो ने पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल की अध्यक्षता की थी। इस अधिवे''ान में खु''चेव ने मैकमिलन के भाषण के दौरान अपना जूता उतार कर टेबल पर पीटना शुरू कर दिया था। खु''चेव द्वारा इस प्रकार के अभद्र व्यवहार करने के कारण वह वि''व भर में सुर्खियों में आ गये थे। इस मुलाकात के दौरान भुट्टो और खु''चेव के बीच काफी नजदीकी सम्बन्ध स्थापित हो गये। खु''चेव और भुट्टो के बीच काफी बातचीत हुई। भुट्टो लिखते है कि ''मैं खु''चेव को बेहद पसन्द करता हूँ और वह भी मुझसे स्नेह रखते है, सोवियत यात्रा के दौरान हम दोनो लोगो के बीच काफी दिलचस्प बाते हुई थी।''

जुल्फिकार अली भुट्टो मास्को की यात्रा के दौरान सोवियत संघ से जो संधि प्रारूप का खाका लाये थे वह भुट्टो की एक बड़ी जीत थी। इसके साथ ही साथ पाकिस्तान की विदे''ा नीति जो कई वर्षो से एक ही जैसी चली आ रही थी, भुट्टो के कारण उसमें व्यापक परिर्वतन आया। पाकिस्तान और सोवियत संघ के बीच संधि पर बड़ी

उलझनों के बाद हस्ताक्षर हुए। ''इस संधि में भुट्टो सोवियत संघ के सामने 30 मिलियन डालर ऋण के रूप में मॉगा था। पाकिस्तान और सोवियत संघ के बीच वार्तालाप के शुरूआती दौर में सोवियत संघ इस बात पर अड़ा था कि वह इस ऋण को पॉच प्रति''ात व्याज दर पर ही देगा। भुट्टो इस बात से सहमत नही थें, उन्होनें सोवियत संघ को पूर्व के सन्दर्भो का उल्लेख करके यह याद दिलाया कि सोवियत संघ ने पहले ढाई प्रति''ात ब्याज दर पर यह ऋण देने के लिए राजी था। लेकिन सोवियत संघ भुट्टो की बातों से सहमत नही हुआ। इस प्रकार से यह संधि असफल होती नजर आने लगी। भुट्टो यह जानते थे कि पाकिस्तान की कैबिनेट पॉच प्रति''ात व्याज पर ऋण की मंजूरी कभी नही देगी। इस कारण भुट्टो बड़ी ही झुझलाहट से इस संधि के लिए मना कर दिए और उन्होनें अपने अगले दिन की लेनिन गार्ड की प्रस्तावित यात्रा को रद्द रक दिया, तथा पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल के सभी सदस्यों को अपना सामान बॉधने को कहा। भुट्टो के इस प्रकार के व्यवहार को देखकर सोवियत संघ के लोग काफी व्याकुल हो रहे थे अन्ततः सोवियत संघ ने अपना फैसला वापस लेते हुए ढाई प्रति''ात ब्याज पर धन देने के लिए राजी हो गया। भुट्टो की इस प्रकार की चतुराई के कारण पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल न मात्र ढाई प्रति''ात के मामूली ब्याज दर पर 30 मिलियन डॉलर ऋण के रूप में लेकर पाकिस्तान वापस लौट आया। सोवियत संघ के मंत्री श्री मिकोयॉन जो इस मामले को देख रहे थे वह भुट्टो के इस प्रकार के सौदेबाजी के कौ''ाल से बहुत प्रभावित हुए और पाकिस्तानी राजदूत आगा हिलाले से मास्को में कहे कि ''भुट्टो कम उम्र का एक जवान और चालाक व्यक्ति है''। भुट्टो ने जो 30 मिलियन डालर ऋण तेल समझौते के लिए पाकिस्तान लेकर आये तो उसको लेकर कैबिनेट में जो विरोज हो रहा था उस पर उन्होनें पुनः विचार किया और कहा कि इस समझौते में जो अड़चने है वह मेरी सरकार के है। भुट्टो लिखते है कि अयूब खॉन की कैबिनेट के ही कुछ प्रभाव''ाली मंत्री ही उनको सलाह देते है कि तेल समझौते के लिए की गई यात्रा अविचारणीय है। लेकिन भुट्टो इन कड़े विरोध के बावजूद भी इस समझौते को लेकर दृढ प्रतिज्ञ थे अन्ततः इस समझौते पर पाकिस्तानी सरकार ने हस्ताक्षर कर ही दिया। यह पाकिस्तान के लिए साम्यवादी गुट के साथ सम्बन्ध बनाने का पहला प्रस्ताव था जो कि पॉ''चमी नीति के खिलाफ था। इस समझौते में पाकिस्तानी जनता भी भुट्टो के साथ थी। इस समझौते का पाकिस्तानी जनता ने काफी उत्साह के साथ स्वागत किया। भुट्टो को पाकिस्तान में चारो ओर इस निर्णायक फैसले के निर्माता के रूप में स्वीकार किया। इतने विरोध के बावजूद भी भुट्टो अपने मकसद में कामयाब रहे और उनकी इस कामयाबी ने उन्हें एक दृढनि''चय एवं एक र्निविरोधी स्वतन्त्र राजनेता के रूप में स्थापित किया व आगे उनके राजनीतिक जीवन के लिए एक नये मार्ग को प्र''ास्त किया।

जुल्फिकार अली भुट्टो पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति को सुदृढ करने में लगे हुए थे। मार्च 1960 ई0 में अयूब खॉन ने भुट्टो को क''मीर समस्या का भी भार सौपा था। अयूग खॉ इस समय कोई भी विदे''ाी मामला होता था तो वह भुट्टो से ही सलाह लेकर करते थे एक प्रकार हम कह सकते है कि इस समय भुट्टो राष्ट्रपति अयूब खॉ के सबसे करीबियों में से थे। भुट्टो की बातों को अयूब खॉन काफी एहमियत देते थे। उस समय भारत और पाकिस्तान के बीच क''मीर समस्या के अलावा नदी–जल विवाद भी एक समस्या थी इस समस्या के समाधान के लिए समय–समय पर काफी प्रयास किये गये लेकिन यह समस्या इतनी जटिल थी और दोनो पक्षो का रवैया इतना कठोर था कि कोई स्थाई समाधान निकाला नही जा सका। आखिरकार वि''व बैंक की मध्यस्थता व सक्रिय प्रयत्नो के परिणाम स्वरूप एक लम्बे प्रयास के उपरान्त दोनो दे''ाो के मध्य नदी–जल विवाद के समाधान हेतु एक स्थाई समझौता करने में सफलता प्राप्त हुई। यह समझौता भारत–पाकिस्तान सम्बन्धों की सुदृढता में एक महान कदम माना जा रहा था। परिणामतः इस समझौते पर हस्ताक्षर करने हेतु भारतीय प्रधानमंत्री पण्डित नेहरू ने 19 सितम्बर 1960 ई0 को पाकिस्तान की पॉच दिवसीय यात्रा की। इस यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री नेहरू व पाकिस्तान के राष्ट्रपति मोहम्मद अयूब खॉन ने नदी–जल समझौते पर हस्ताक्षर कर एक नये अध्याय की शुरूआत की। यह समझौता खासकर पाकिस्तान के लिए फायदे मन्द साबित हुआ। क्योंकि इस संधि की शर्तो के आधार पर भारत सिर्फ पाकिस्तान को सारी की सारी पॉ''चमी नदियों को आवंटित करने के लिए सहमत नही हुआ, बल्कि वह अपनी भी तीनों पूर्वी नदियों–रावी, व्यास और सतलुज से भी उस समय तक पाकिस्तान को पानी देने के लिए सहमत हुआ, जब तक कि पाकिस्तान अपनी–सिंचाई व्यवस्था करने में समर्थ न हो जाय। इस सन्धि से सिन्धु जल परियोजना के विकास के लिए एक कोष स्थापित किया गया। इस कोष में अमेरिका ने 725 मिलियन डालर व भारत ने 175 मिलियन डालर का योगदान देने का नि''चय किया। इस कोष का उद्दे''य पाकिस्तान में सिंचाई परियोजना की विकास योजनाओं को एक साकार रूप देना था। जुल्फिकार अली भुट्टो इस सन्धि पर हस्ताक्षर होने के तुरन्त बाद राष्ट्रपति अयूब खान से जाकर मिले और उनसे कहे कि वह क''मीर झगड़े को छोड़कर और सारे मसलो को भूल जायें और प्रधानमंत्री पं0 नेहरू को यह बता दे कि पाकिस्तान को भारत के साथ एक ऐसा समझौता करने की बेहद फिक्र है जो क''मीर की जनता की जायज इच्छाओं को पूरा कर दे। पं0 नेहरू पाकिस्तान में पॉच दिन तक रहे। राष्ट्रपति अयूब खॉ के साथ उनकी कई बार बातचीत हुई क''मीर की समस्या पर दोनो

तरफ के विचारों को जानने के बाद इस वार्तालाप के समाप्त होने पर एक विज्ञप्ति जारी की गई। भारत के प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति अयूब ने बड़ी ही नम्रता से बातचीत किये और उन्हें सलाह दिये कि वह खुल कर सॉस ले और किसी बात की चिन्ता न करे। लेकिन भुट्टो मायूस थे सच तो यह है कि पूरे पाकिस्तान में मायूसी छा गयी थी कि क'मीर के झगड़े को समाप्त करने के सिलसिले में बात आगे नहीं बढ़ पायी।

भारत के प्रधानमंत्री पं0 नेहरू के अपने दे'ा लौट जाने के दो दिन बाद जुल्फिकार अली भुट्टो राष्ट्रपति अयूब खॉन से मुलाकात किये और उन्हें बताया कि उस विज्ञप्ति की तरफ आम जनता का रवैया काफी उपेक्षा जनक है और जनता क'मीर समस्या के बारे में क्या सोच रही है, भुट्टो इस बात को अयूब के दिल में पूरी तरह से बिठा दिये कि भारत के इरादे नेक नही है। इस लिए नदी जल समझौते पर हस्ताक्षर के समय दोनों दे'ाो के मध्य मैत्री सम्बन्ध अपने चरमोत्कर्ष पर थे लेकिन इस समझौते के तुरन्त बाद दोनों दे'ाो के मधुरता पूर्ण सम्बन्ध धीरे–धीरे कटुता की ओर बढ़ने शुरू हो गये। राष्ट्रपति अयूब खॉन ने अक्टूबर 1960 ई0 के शुरू में आजाद क'मीर के कुछ हिस्सों का दौरा किये। उनके इस दौरे का खास मकसद था। राष्ट्रपति अयूब खॉन ने 6 अक्टूबर 1960 ई0 को क'मीर (मुजफ्फराबाद) में भाषण देते हुए कहा कि ''पाकिस्तान भारत के साथ तब तक सहयोग की भावना नही रख सकता जब तक कि क'मीर समस्या का समाधान नही हो जाता। पाकिस्तानी सेना क'मीर को अनि'चित काल तक अनसुलझा नही रख सकती। भारत में राष्ट्रपति अयूब खॉन के उक्त वक्तत्य पर गहरी चिन्ता व्यक्त की गई और इस घोषण को नदी–जल समझौते के दौरान उत्पन्न मैत्री पूर्ण भावना पर कड़ा प्रहार बताया गया। भारत के प्रमुख पत्र टाइम्स ऑफ इण्डिया ने अपने सम्पादकीय में इसे राष्ट्रपति अयूब की धमकी की संज्ञा दी गयी। इस घटना के तुरन्त प'चात पण्डित नेहरू ने न्यूयार्क में अपनी वार्ता के दौरान क'मीर समस्या को एक पिटारे की संज्ञा दी और कहे कि इसे न खोलने में ही अकलमन्दी है। भुट्टो ने लिखा है कि ''मुझे इस से बहुत खु'ाी हुई कि राष्ट्रपति अयूब खॉ भारत के प्रधानमंत्री पं0 नहेरू की न्यूयार्क में कही हुई बात से काफी नाराज हुए और राष्ट्रपति अयूब खॉन ने इस बात जवाब देने के लिए मेरी कही हुई बातो को इस्तेमाल किये और राष्ट्रपति अयूब खॉन ने कहा कि क'मीर समस्या पिटारा नही है, बल्कि एक टाइम बम है, जिसे जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी निष्क्रिय कर दिया जाये''। इस प्रकार से भुट्टो की सलाह पर ही अयूब खॉन विदे'ाी निर्णय और बातचीत करते थे। इस तरह भारत और पाकिस्तान के बीच क'मीर समस्या को लेकर गम्भीर मतभेद उत्पन्न हो गया था। क'मीर समस्या का कार्यभार पाकिस्तानी सरकार ने भुट्टो को सौपा था। इसलिए यह कार्य भुट्टो के लिए काफी चुनौतीपूर्ण था। जब यह बात एक हकीकत के तौर पर सामने आ गयी कि भारत और पाकिस्तान के बीच समझौते की सीधी बातचीत नाकाम हो गयी है तब जुल्फिकार अली भुट्टो ने राष्ट्रपति अयूब खॉ से सीधी वार्ता की और भुट्टो ने कहा कि भारत की तरफ से कितना खतरा पैदा हो गया है। इसलिए पाकिस्तान को सुरक्षा परिषद् से मद्द मॉगनी चाहिए। भुट्टो की बात को गम्भीरता से लेते हुए पाकिस्तान ने एक बार फिर क'मीर की समस्या को सुरक्षा परिषद् के सामने ले जाने का फैसला लिया। लेकिन सुरक्षा परिषद् में इस समय पाकिस्तान को प'चमी दे'ाों का वह समर्थन नही मिला पाया जो कि 1955–56 ई0 में प्राप्त हुआ था। दिसम्बर 1961 ई0 में प्रधानमंत्री नेहरू ने कहा कि क'मीर के मामले में पाकिस्तान को मौजूदा हालात को ही मान लेना होगा और बातचीत सिर्फ युद्व विराम रेखा में थोड़े–बहुत हेर–फेर के बारे में हो सकती है। उन्होनें एक ताना'ााह की तरह बात करने की को'ि'ा की। लेकिन क'मीर की समस्या में एक पक्ष पाकिस्तान का भी था और उस समय क'मीर समस्या को भुट्टो देख रहे थे इसलिए उनसे यह उम्मीद तो नहीं की जा सकती थी िकवह पं0 नेहरू के बयानों को चुपचाप मान लेगें।

जुल्फिकार अली भुट्टो राष्ट्रपति अयूब खॉ से मुलाकात करके उनसे यह साफ कह दिये कि युद्व–विराम रेखा के आधार पर क'मीर की समस्या के किसी हल को पाकिस्तान मानने को तैयार नही है और भुट्टो ने अयूब से यह भी कहा कि अगर क'मीर समस्या के सवाल को सुलह समझौते से तय करना नामुम किन हो तो राष्ट्रपति अयूब खॉ को दूसरे तरीके को भी अपनाने की बात कही। भुट्टो के लिए दूसरे तरीके इस्तेमाल करने की बात कहने की वजह भी थी, क्योंकि भारतीय नेता चाहते थे कि हम उनका हुक्म मानना सीख ले। भुट्टो के सलाह पर सर मुहम्मद जफरूल्ला खॉ ने जनवरी 1962 ई0 में सुरक्षा परषिद् की बैठक होने से पहले भुट्टो ने एक बयान तैयार करने में जफरूल्ला खॉ की मद्द की। अमेरिकी राष्ट्रपति केनेडी ने भी सुरक्षा परिषद् की बैठक आमंत्रित करने के स्थान पर यह सुझाव दिया कि दोनो पक्ष सीधी वार्ता के द्वारा इस समस्या का समाधान ढूॅढे। केनेडी ने यह भी सुझाव दिया कि वि'व बैंक के अध्यक्ष (यूजीन ब्लेक) दोनो पक्षों के मध्य अपनी सद्सेवा प्रदान करे व इस समस्या के समाधान में भी अपने प्रयास करें। पाकिस्तान ने अमेरिकी राष्ट्रपति के मध्यस्थता के प्रस्ताव को स्वीकार कर दिया लेकिन भारत ने इसे तीसरे पक्ष का हस्तक्षेप मानते हुए अस्वीकार कर दिया। भुट्टो के कहने पर पाकिस्तान ने सुरक्षा परिषद् की बैठक बुलाये जाने की मांग को बनाये रखा। अतः बिट्रेन ने इस बैठक को आमंत्रित कराने में

अपनी महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की। 1 फरवरी 1962 को क''मीर समस्या पर विचार–विम''ा करने के लिए एक बैठक बुलाई। इस बैठक में क''मीर समस्या के प्र''न को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते हुए तनाव को दृष्टिगत रखते हुए तत्काल समाधान खोजने की आव''यकता पर बल दिया गया। लेकिन रूस ने भारत के हित को देखते हुए बीटो का प्रयोग करके इस सुरक्षा परिषद् की बैठक को असफल बना दिया। क''मीर समस्या पर भारत को रूस द्वारा मद्द करते देख भुट्टो का झुकाव चीन की तरफ हो गया और पाकिस्तान तथा चीन के बीच संबंधो का विकास प्रारम्भ हो गया और भुट्टो ने धीरे–धीरे सोवियत संघ के साथ सम्बन्ध को कम करने लगे। चीन की सरकार ने पाकिस्तान की सरकार को इस बात का यकीन दिलाने लगी कि दोनो दे''ाो के बीच के हितो की किसी भी टकराव की कल्पना भी नही की जा सकती जिसकी वजह से उनके दोस्ती के सम्बन्ध में खतरा उत्पन्न हो सके। जनवरी 1962 ई0 में पाकिस्तान ने सीमा निरधारण कर लेने के सवाल पर चीन के रवैये को जानने की कोि''ा''ा की। भुट्टो ने अयूब खॉ से सलाह करके 28 मार्च 1961 को एक कुटनीतिक नोट चीन को भेजा जिसमें चीन और पाकिस्तान के बीच सीमा निधारण करने का उल्लेख किया गया था। चीनी सरकार ने इसका जवाब देने में बहुत समय लगा दिया, क्योंकि चीन अपनी फौज भारतीय सीमा के पास जमा करने तथा हुजा और गिलगित के आस–पास चीनी घुसपैठियों के दलो को संगठित करने में व्यस्थ था। चीन ने पाकिस्तान के सुझाव को जवाब फरवरी 1962 ई0 में दिया। 3 मई 1962 ई0 को दोनो दे''ाो की सरकारो ने एक संयुक्त बयान जारी किया जिसमें दोनो दे''ा अपनी सीमा का पता लगाने और उन्हें निर्धारित करने के मसौदे पर बातचीत करने के लिए राजी हो गये। पाकिस्तान–चीन समझौते की वार्ता की घोषणा पर भारत सरकार ने 4 मई 1962 ई0 को एक कड़ा विरोध पत्र पाकिस्तान एवं चीन सरकार को भेजा जिसमें इस घोषणा पर अपनी गम्भीर चिंता व्यक्त करते हुए दोनों पक्षो को यह चेतावनी दी कि क''मीर क्षेत्र (जो कि भारत का एक अभिन्न अंग बन चुका था) के सम्बन्ध में पाकिस्तान व चीन के बीच होने वाले समझौते को भारत कभी स्वीकार नहीं करेगा। चीन ने 31 मई 1962 ई0 को एक पत्र में भारतीय आपत्तियों को ठुकराते हुए इसे पाकिस्तान एवं चीन का निजी मामला बताया।

जुल्फिकार अली भुट्टो ने भी भारत के इस विरोध को ठुकरा दिया और कहे कि भारत को कोई अधिकार नहीं है कि वह पाकिस्तान का चीन के साथ बात चीत करने का विरोध करें तथा पाकिस्तान इलाके के उस हिस्से की जिसकी रक्षा की जिम्मेदारी अभी तक पाकिस्तान कर रहा है। उस सीमा के बारे में चीन के साथ समझौता कर लेने पर भारत कोई एतराज नही होना चाहिए। भुट्टो को अब तक एक अच्छे राजनीतिक नेता के रूप में पाकिस्तान में देखा जा रहा था। भुट्टो भी यह जानते थे कि इन्हें कब और कहॉ क्या बोलना चाहिए। भुट्टो पाकिस्तान के राजनैतिक वातावरण में बने रहने के लिए वे समझते थे कि पाकिस्तानी जनता में क्या भावनायें उभर रही है। जब भुट्टो को महसूस हुआ कि भारत के विरोध में बोलने पर जनता प्रसन्न रह सकती है तब वे भारत के विरोध में बोलने से भी नही चुकते थे।

जुल्फिकार अली भुट्टो अपने राजनैतिक जीवन के विषय में भी सोचते थे और अपने व्यक्तित्व को वि''लेषित भी करते थे। 10 जुलाई 1962 ई0 में राष्ट्रीय असेम्बली में भाषण देते हुए कहे कि–''मैं भी उसी समाज का अंग हूँ। आज मंत्री बनकर यहॉ बोल रहा हूँ, इसका भी यही कारण है कि मैं इस वि''ोषाधिकार वर्ग का व्यक्ति हूँ। इसलिए इस व्यवस्था के लाभो को मैं स्वीकार करता हूँ। लेकिन इस व्यवस्था से प्राप्त होने वाले फायदे के बावजूद इस तथ्य के बावजूद कि हममें से अनेक इस व्यवस्था को बनाये रखने के लिए संघर्ष करेगें–जूझेगें। इस व्यवस्था में अनेक मौलिक दोष है गल्तियॉ है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत लोग टुच्ची बातों के लिए दुरभि संधियॉ करते है। इससे जनता को नुकसान पहुॅचता है। अन्य लोगो की निर्धनता के प्रति यह लोग आखें बन्द कर लेते है। इससे आलसीपन को प्रोत्साहन मिलता है। ये सामन्तवादी एक दूसरे से भिड़ते रहते है तो गरीब जनता की हालत ज्यों कि त्यों बनी रहती है। कोई विकास का कार्य नही हो पाता। कोई कारखाना नही लग पाता। कहीं सड़के नही बनती, कोई संचार व्यवस्था नही हो पाती, बिल्कुल अॅधेरा होता है, गरीबो और दुखदायी निर्धनता चारो ओर फैली होती है। केवल कुछ बड़े लोग ही खु''हाल बन पाते है। ये अभिमानी जमीदार किन समस्याओं की सुलझाने के लिए आगे आते थे। क्या वे दलित लोगों की भलाई के लिए कुछ सोच पाते थे। भुट्टो के इस प्रकार के विचार से यह प्रकट होता है कि भुट्टो अब एक सामन्तवादी विचार धारा को छोड़कर एक राजनीतिक विचार धारा के अच्छे नेता हो गये है। जो कि गरीब जनता के बारे में काफी सोच रहे है। पाकिस्तान की गरीब जनता के लिए कुछ अच्छा करने के लिए विचार कर रहे है।

जुल्फिकार अली भुट्टो चीन के साथ पाकिस्तान के सम्बन्ध को सुधारने में लगे थे। परन्तु भारत के साथ क''मीर समस्या को सुधारने का कोई प्रयास नही कर रहे थे। इस समय क''मीर समस्या भारत और पाकिस्तान के बीच दीवार बन चुकी थी। इस दीवार को तोड़ने की कोि''ा''ा करने के लिए कुछ विदे''ाी शक्तियां सामने आयी। भारत

और पाकिस्तान के बची समझौता कराने के लिए अमेरिकी राज्य सचिव सैण्डीज व हैरीमान ने नई दिल्ली आकर पण्डित नेहरू और अन्य मंत्रियों से 24 से 27 नवम्बर 1962 ई0 के दौरान विचार विम'र्श किये। जिसमें क'मीर समस्या के समाधान के लिए पुनः नवीन प्रयास करने पर बल दिया गया। पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खॉन और भारतीय प्रधानमंत्री इस बात पर सहमत हो गये कि दोनो दे'ाो के बीच के विवादो वि'ोषकर क'मीर समस्या के समाधान के लिए फिर से प्रयत्न किये जायें। भारत और पाकिस्तान के बीच शान्ति और मित्रता के उद्दे'य को प्राप्त करने के लिए मंत्री स्तर पर वार्ता करने व इसके प'चात दोनो शासनाध्यक्षो के बीच ि'खर वार्ता करने के लिए अपनी–अपनी सहमति व्यक्त की।

इस प्रकार दोनो दे'ाों के मुखिया ने क'मीर समस्या का समाधान करने का विचार कर लिया और दोनो दे'ाों के मंत्रियों के बीच वार्ता 27 दिसम्बर 1962 से 16 मई 1963 तक चली। इस वार्ता में कई समस्याओं पर बल दिया गया और भारत और पाकिस्तान के बीच खुलकर बातचीत हुई। पाकिस्तान मंत्रियों के प्रतिनिधिकर्ता भुट्टो थे भुट्टो राष्ट्रपति अयूब खॉ के कहने पर इस वार्ता में कोई जल्दबाजी नही दिखा रहे थे क'मीर समस्या को भुट्टो काफी सोच विचार कर लेने के उपरान्त ही निपटाना चाहते थे। क'मीर समस्या पर ''चूॅकि भारत और पाकिस्तान का मेल–मिलाप कराने के लिए अमरिकी मंत्री और बिट्रि'ा मंत्री आये थे इस लिए पाकिस्तान इन्हे मना तो कर नही सकता था और समझौता भी नही कर सकता था। क्योंकि 1962 में जब भारत और चीन युद्व शुरू हुआ तो उस समय भारत और पाकिस्तान के सम्बन्धों में फिर उथल–पुथल शुरू हुई। पाकिस्तानी राजनीतिज्ञों ने भारत को दोषी ठहराया। चीन ने भारत पर जब हमला किया तो भारत ने अमेरिका और बिट्रेन से सैनिक सहायता की मॉग की। इन दोनो दे'ाो से युद्वपयोगी सामान भारत पहुॅचने लगा। पाकिस्तान ने इसका बड़ा विरोध किया। पाकिस्तान ने कहा कि चीन की ओर से भारत पर इस प्रकार का कोई हमला नही हुआ है कि इतने बड़े पैमाने पर उसको सैनिक सहायता दी जाए, परन्तु पाकिस्तान के विरोध का कोई असर नही पड़ा और भारत को सैनिक सहायता मिलती रही। अतः पाकिस्तान के मंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो इस समस्या को टालत रहे।

इस प्रकार उपर्युक्त समस्यों का अध्ययन करने पर यह पता चलता है कि क'मीर समस्या का समाधान इतनी जल्दी सुलझाना काफी कठिन कार्य था। लेकिन भुट्टो इस कार्य को सफल बनाने के प्रयास में लगे हुए थे। अगर हम भुट्टो के अब तक के राजनीतिक जीवन का मूल्यांकन करें तो हम देखते है कि वे किस तरह एक वकील के रूप में पाकिस्तान में अपना भविष्य बना रहे थे और साथ ही साथ पाकिस्तान की राजनीति में प्रवे'ा करने के इच्छुक भी थे। भुट्टो अपने पिता और बीबी नुसरत भुट्टो के सहयोग से पाकिस्तान की राजनीति में आये। प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य से अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत की और अयूब खॉ के मंत्रिमण्डल के सदस्य के रूप में भुट्टो विभिन्न पदो पर काम करते रहे। वाणिज्य मंत्री के पद पर रहते हुए उन्होने पाकिस्तान की निर्यात व्यवस्था को सुद्दढ करने का प्रयास किया। अल्पसंख्यों के मामले, राष्ट्रीय–पुर्ननिर्माण, नवनिर्मित मंत्रालय, ईधन, बिजली, प्राकृतिक साधन जैसे मंत्रालयों को उन्होने सम्भाला। भुट्टो ने पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति को सुद्दढ करने तथा सोवियत संघ से अच्छे सम्बन्ध बनाने के लिए एक तेल सन्धि किये। इस सन्धि से भुट्टो ने सोवियत संघ से 30 मिलियन डालर ऋण के रूप में प्राप्त करने में सफल रहे। इस सन्धि का पाकिस्तान के कैबिनेट के कुछ प्रभाव'ाली लोगो ने विरोध भी किया, लेकिन पाकिस्तान की जनता के सहयोग से भुट्टो को यह सन्धि करने में सफलता प्राप्त हो गयी। इस प्रकार भुट्टो पाकिस्तान की जनता के भी प्रिय हो गये।

सन्दर्भसूचि

1. ''पीलू–मोदी'' जुल्फी माई फ्रैण्ड'' 'थामसन प्रेस (इण्डिया) लिमिटेड, पब्लिके'ान डिविजन दिल्ली 1973
2. सतनाम सिंह, ''बीबी बेनजीर और पाकिस्तान की राजनीति'' 'वि'वभारती पब्लिके'ान्स, दिल्ली–2008
3. हरि प्रका'ा त्यागी, ''भुट्टो की कानूनी हत्या'' अनुराग प्रका'ान महरौली नई दिल्ली–1979
4. राम नरे'ा सिंह, ''पाकिस्तान की हकीकत'' ि'ावा प्रका'ान पटना–2003
5. हुमायूॅ मिर्जा,''फ्राम प्लासी टू पाकिस्तान'' यूनाइटेड प्रेस ऑफ अमेरिका–1999
6. सलमान तासीर, ''भुट्टो पालिटिकल बायोग्राफी'' विकास पब्लि'िांग हाउस दिल्ली–1980
7. दिलीप मुखर्जी, ''जुल्फीकार अली भुट्टो क्वेष्ट फॉर पावर'' विकास पब्लिके'ान हाउस दिल्ली–1972
8. अनुपम त्यागी,'' भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध'' रिजेन्सी प्रका'ान नई दिल्ली–2004
9. भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध, एक विरोधाभास, प्रका'ान विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, सितम्बर 1965
10. बुरहानुद्दीन मुमिन, ''भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध'' प्रिन्टवैल प्रका'ान जयपुर–1995
11. बं'ाीलाल काक, ''जुल्फिकार अली भुट्टो, डायरी के आखिरी पन्ने'' राधाकृष्ण प्रका'ान नई दिल्ली– 1979

Vol. 12, Issue: 2, February: 2024
(IJRSML) ISSN: 2321 - 2853

12. के.के. काल, ''एिशया का उद्भव एवं विकास'' उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ–1988
13. अनिल कुमार,'' भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध'' इण्डियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीव्यूटर्स, दिल्ली–2005
14. स्टेनले ए. वूल्पर्ट, ''जुल्फी भुट्टो ऑफ पाकिस्तानः हिज लाइफ एण्ड टाइम्स'' आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क–1993
15. के.पी.मिश्रा,''दि रोल ऑफ दि यू.एन. इन दि इन्डो–पाकिस्तान कान्टीनेन्ट'' विकास पब्लिकेशन दिल्ली–1971
16. शिव बहादुर सिंह, ''पाकिस्तान शासन एवं राजनीति'' गंगाराम एण्ड ग्रैंडसन्स वाराणसी–2002